भारत में मतदान व्यवहार की प्रवृत्तियां :

भारत प्रतिनिधियात्मक प्रजातंत्र है मतदान वह माध्यम है जिसके द्वारा प्रतिनिधियात्मक प्रजातंत्र की स्थापना होती है। मतदान प्रक्रिया प्रजातन्त्र की क्रियाओं में हृदय स्थान रखती है तथापि यह नहीं कह सकते केवल मतदान की प्रक्रिया प्रजातंत्र को प्रतिनिधियात्मक बनाती है। स्वतन्त्र और निष्पक्ष चुनाव व्यवस्था मे उत्तरदायित्व स्थापित करते है जनता में राजनीतिक शिक्षा का प्रसार करते है राजनीतिक समाजीकरण का साधन है भारत संसदात्मक प्रजातन्त्र है भारत मे प्रत्येक पाँच वर्ष पश्चात चुनावों का प्रावधान है भारतीय नागरिकों के पास मतदान का संवैधानिक अधिकार 326 मतदान व्यवहार का अध्ययन भारतीय प्रजातन्त्र प्रकृति और प्रसार को समझने को मदद करती है 1952 प्रथम आम चुनाव और इसमे मे 1ली लोक सभा का गठन किया गया भारत मे अबतक 14 वाँ आम चुनाव हुआ है। साथ ही राज्य विधानिका के लिए चुनाव हुआ अत: भारत मे मतदान व्यवहार की प्रवृत्ति को समझा जा सकता है

भारत मे मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले तत्व मतदान व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों कारकों से प्रभावित होता है।

मतदान व्यवहार को निर्धारित करने वाले अन्य सामाजिक कारक जो चुनाव विशेष से जुड़े होते है अत:

सामान्य मतदान व्यवहार के कौन नहीं है।

1. प्रमुख कारक है।
2. अर्थ व्यवस्था की स्थिति
3. बेरोजगारी का स्तर क्या है।
4. मुद्रास्फीति क्या है
5. वस्तुओं का मूल्य आवश्यक वस्तुओं की कमी
6. दल के नेतृत्व का प्रभाव नेता के व्यक्तित्व का प्रभाव

भारत में यह प्रवृत्ति देखी गयी है जनता करिश्माई व्यक्ति से प्रभावित होकर मत देती है दक्षिण भारत में यह प्रवृत्ति बहुत आम है अभिनेता, खिलाड़ी।

इसी तरह भारतीय जनता परम्परागत सत्ता के आधार पर भी कुछ विशेष परिवारों से जुड़े व्यक्तियों के पक्ष में मत देते हैं। स्थानीय जीवन में उपलब्ध सुविधाओं को लेकर न्याय प्रशासन की स्थिति

कोई महत्वपूर्ण या विशिष्ट घटना हो सकती 1971 में पाक के विरुद्ध के युद्ध के पश्चात कांग्रेस को भारी बहुमत मिला। वही Emergency के कारण कांग्रेस को भारी नुकसान हुआ रथ यात्रा के कारण B.J.P. को फायदा मिला।

मीडिया

मीडिया एक महत्वपूर्ण अल्पकालीन कारक है समसामयिक संदर्भ में मीडिया की भूमिका में वृद्धि हुई opinion pol Agzgrd.pol में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है तृतीय दुनिया के देशों में उपयोगिता कारण।

कारण, मतदान व्यवहार को प्रभावित करते है भारत के सन्दर्भ में यह विश्लेषण लागू किया जा सकता है।

बौद्धिक प्रवृत्तियां =

समाजिक कारक : आयु वर्ग अधिकांश मतदाता 30 से 50 वर्ष की आयु के होते हैं युवा वर्ग विकसित क्षेत्रों की तुलना में मतदान में कम भाग लेता है

लिंग Sex. = पुरुषों की तुलना में महिलाएं कम सक्रिय हैं लेकिन ग्रामीण महिलाएं बहुत सक्रिय हैं ये पारिवारिक संरक्षणात्मक महिलाएं परिवार के मुखिया के अनुसार वोट देती हैं।

शिक्षा का स्तर. जो शिक्षित लोग मतदान में अधिक सक्रिय हैं यह देखा गया कि नगरीय क्षेत्रों के मतदाता से ग्रामीण क्षेत्र के मतदाता अधिक सक्रिय हैं। ग्रामीणों में यह त्योहार की तरह मनाया जाता है

जाति : जाति पर भारतीय समाज की आधार शिला जाति व्यवस्था पर आधारित है। जाति के माध्यम से भारत में प्रजातन्त्र का प्रसार हुआ है जिसे रजनी कोठारी जाति का राजनीतिकरण और राजनीति का जातीयकरण कहा।

भारत में जाति पर आधारित राजनीतिक दल पाये जाते हैं जाति राजनीतिक संगठन और

राजनीतिक समाजीकरण का महत्व पूर्ण साधन है।

धर्म

धर्म ने भी बहुत लम्बे समय से मतदान व्यवहार को प्रभावित किया सभी राजनीतिक दल धर्म आधारित राजनीति करते है।

भाषा :-

स्वास के कारण भारतीय राज्यों ने भाषा की राजनीति ने मतदान व्यवहार को काफी प्रभावित किया है।

1990 के पश्चात् से राजनीति में धन और बल दोनों का महत्व बढ़ा है उपराधी पृष्ठभूमि वाले लोग धर्म और आतंक का सहारा लेकर मतदान व्यवहार को प्रभावित करते है

विचार धारा :

साम्यवादी विचार धारा धार्मिक कट्टरता प्रभावित करती है।

पारिवारिक परम्परा :-

पारिवारिक परम्परा के आधार पर मतदान व्यवहार करते है।

वर्ग संरचना = से प्रभावित होकर मध्यम वर्ग, पूंजीपति वर्ग, कृषक वर्ग, उच्च वर्ग, आर्थिक नीतियों को देखते हुए राजनीतिक दलों को वोट देते है।

सत्ता ~~का~~ का उपयोग कर के राजनीतिक दल भी उपलब्धिया प्रभावित करती है।

सत्ता के विरुद्ध मतदान करने की प्रवृत्ति पायी जाती है।

भ्रष्टाचार = इसके अतिरिक्त उपराष्ट्रीय प्रवृत्तियां जैसे पृथक राज्यों की मांग भारत से अलगाव की मांग यह सभी एक लम्बे समय तक प्रभावित करते रहे

भारत में प्रथम आम चुनाव से लेकर 13वें आम 1999 तक उपरोक्त प्रवृत्तियां देखी गयी भारत की जनता विभिन्न कारकों की मान्यता व सामाजिक, प्रतिनिधित्व से अधिक प्रभावित होती है।

14वें आम चुनाव के दौरान कुछ नयी प्रवृत्तियां देखी गई। 14वीं लोक सभा के सम्पन्न चुनावों का परिणाम 13 May 2004 को घोषित किया गया

(1) कांग्रेस + सहयोगी दलों 216 सीटों पर विजय

(2) B J P. + सहयोगी 187

(3) वामपंथ ने 61

अन्य 75 सीट पर विजय पायी

उपरोक्त परिणाम से भिन्न मतदान व्यवहार सामने आता है। यह माना जा रहा कि द्विदलीय व्यवस्था का अन्त हो रहा और विभाजित जनादेश का उदय हो रहा है। भारतीय जनता पार्टी के लिए यह नकारात्मक

मतदाताओं ने 1999 में N.D.A. 41.3 प्रतिशत दिया 2004 में 35.3 प्रतिशत वोट दिये।

गठबंधन का महत्व बढ़ा। 13वी लोकसभा 18 सीट 2004 में हुआ। राष्ट्रीय दलों का महत्व कम हुआ क्षेत्रीय दलों का महत्व बढ़ा है ऐसा माना जाता था कि कांग्रेस पार्टी समाप्त हो गई है। परन्तु यह आंकलन को गलत साबित हुआ।

पहली बार भारतीय मतदाताओं ने स्थानीय और आधार भूत मुद्दों को ध्यान रखते हुए मतदान किया है। N.D.A के India Shining feelgood जैसे नारे जनता को प्रभावित करने में असफल रहे भारत-पाक सम्बन्धों में सुधार आर्थिक विकास की दर मतदाताओं को प्रभावित करने में असफल रही। आधार भूत आवश्यकताओं को सड़क, बिजली, पानी को ध्यान में रखते हुए मतदान किया था राजनीतिक दल सामान्य जनता की मूलभूत आवश्यकताओं को अनदेखा नहीं कर सकते हैं 14 वें लोकसभा में बहुत कम [illegible] का प्रभाव देखा जा सकता है

दलित, आदिवासी, महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ा है। कई अनुभवी नेता हार, यशवन्त सिन्हा, मुरली मनोहर जोशी मतदाताओं ने युवा प्रत्याशी को चुना है यह दिखाता है कि [illegible] हो रहा है इस चुनाव में यह दिखाया यह विशेषता

पर प्रश्न चिह्न लगा है।

अखिल भारतीय स्तर पर मतदान व्यवहार में समानता आयी है। मुम्बई के मतदाताओं ने जिस प्रकार का मत दिया वैसा ही मत गुड़गाँव के मतदाता ने दिया वैसा ही विजयवाड़ा या हजारीबाग के मतदाता ने दिया है।

निष्कर्ष =

मतदान प्रजातंत्र की आत्मा है भारत में राजनीतिक चेतना यद्यपि विकसित देशों की तुलना में कम विकसित भारतीय मतदाता ने कटट्टी आम समझ का परिचय दिया है। चाहे इंदिरा गांधी या राजीव गांधी जैसे नेता हो जनता ने उनके विरुद्ध जा कर मतदान किया है जनता को अनदेखा नहीं किया जा सकता है राजनीतिक दल जनता के प्रति कितने उत्तरदायी हैं यह सब मतदान व्यवहार को प्रभावित करता है तीसरी दुनिया के देशों में भारत ही एक लोकतंत्र है जिसमें नियमित चुनाव हुआ है सार्वजनिक वयस्क मताधिकार को एक प्रयोग के रूप में ~~प्रयोग~~ ग्रहण किया गया विभिन्न सीमाओं के बावजूद भारतीय मतदाताओं ने संविधान निर्माता के आशाओं के अनुरूप राजनीतिक समझ का परिचय दिया।